BA-3, Paper-7.
Topic - Political Culture (राजनीतिक संस्कृति)
Date - 31.07.2020
Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. Sc.), RMC, VKSU.

राजनीतिक संस्कृति के आर्थिक एवं सामाजिक तत्वों का अध्ययन करके हम राजनीतिक संस्थाओं के वस्तुपरक अध्ययन कर सकते हैं। रा० सं० के द्वारा राजनीतिक संस्थाओं के बाहरी ढांचे का अध्ययन संभव है। रा० सं० राजनीतिक संस्थाओं में रा० घटनाओं और उन घटनाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप व्यक्तियों के व्यवहार के बीच एक कड़ी का काम करती है।
सिडनी वर्बा " रा० संस्कृति में आनुभाविक विश्वासों, अभिव्यक्तात्मक प्रतीकों, और मूल्यों की वह व्यवस्था निहित है जो उस परिस्थिति अथवा दशा को परिभाषित करती है जिसमें राजनीतिक क्रिया संपन्न होती है।

राजनीतिक संस्कृति की प्रकृति एवं प्रमुख लक्षण :-

1. राजनीतिक संस्कृति एक अमूर्त मानसिक धारणा - रा० सं० का मूल आधार व्यक्ति और समाज के राजनीतिक मूल्य एवं विश्वास होते हैं। ये मूल्य और विश्वास सामान्य धारणाओं के अंग होते हैं।
2. रा० संस्कृति अनेक तत्वों का सामूहिक और समन्वित रूप है। रा० संस्कृति सामान्य संस्कृति का एक अंग है और सामान्य संस्कृति के ही समान अनेक तत्वों का सामूहिक एवं समंवित रूप है।
3. रा० संस्कृति में गतिशीलता - रा० सं० यदि एक ओर ऐतिहासिक विरासत तथा भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है तो दूसरी ओर सामाजिक आर्थिक संरचना के द्वारा इसका नियमन किया जाता है।

राजनीतिक संस्कृति के आयाम

1. राष्ट्रीय एकरूपता - राजनीतिक एकरूपता सर्वाधिक निर्णायक राजनीतिक विश्वास है। मतलब कि व्यक्ति किसी न किसी राजनीतिक ढांचा से अपने को बांध लेता है।
2. अपने साथी नागरिकों से एकरूपता की भावना
3. शासन निर्गतों के बारे में आस्थाएं - रा० संस्कृति के प्रथम दो आयामों को ठोसता उपलब्ध कराने में इस बात का बहुत

Scanned with CamScanner

महत्व होता है कि जनता सरकार के द्वारा किए जाने वाले कार्यों के बारे में आशावान रहती है या निराश हो जाती है।

राजनीतिक संस्कृति के आधार पर निर्माणकारी तत्व :-

1. ऐतिहासिक आधार - जिस प्रकार किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के लिए अतीत से पूर्णतया नाता तोड़ लेना संभव नहीं होता उसी प्रकार रा० संस्कृति की प्रकृति को विशेष रंग प्रदान करने वाला प्रमुख आधार संबंधित देश की के राजनीतिक जीवन का अतीत कहा जा सकता है।

2. भौगोलिक आधार - प्रत्येक राष्ट्र की भौगोलिक अवस्था एवं स्थिति भी रा० सं० के निर्माण में अपना विशिष्ट योगदान देती है।

3. समाज और सामान्य संस्कृति का आधार :- सा० सं० रा० सं० के एक प्रमुख नियामक तत्व का कार्य करती है।

4. सामाजिक आर्थिक संरचना का आधार - यह आधार किसी भी देश के सामाजिक जीवन में जाति, वंश, लिंग वर्ण और धर्मगत भेदों की बहुत अधिक प्रबलता हो तो लोकतांत्रिक रा० सं० की प्राप्ति बहुत कठिन हो जाती है।

5. धार्मिक विश्वास

6. विचारधाराओं का आधार :- रा० वि० रा० सं० की एक नियामक शक्ति बन गई है।

रा० सं० आमण्ड और पॉवेल की धारणा :- व्यक्ति में रा० उद्देश्यों के प्रति जागरूकता और व्यक्तिगत कार्यों में उनके महत्व को समझना ही राजनीतिक संस्कृति है। A & P के अनुसार, रा० व्यवस्था के प्रति व्यक्ति का एक दृष्टिकोण कुछ तत्त्वों पर निर्भर करता है, जिन्हें व्यक्ति के संदर्भ में 'Variable of political culture' कहा जा सकता है और ये निम्न हैं :-

1. ज्ञानात्मक अभिमुखीकरण :- व्यक्तिगत हित ज्यादा प्रबल होता है
2. भावात्मक " - व्यक्ति की भावनाओं से,
3. मूल्यांकनात्मक " (orientation) - व्यक्ति रा० संगठन उसके कार्यों, लक्ष्यों और उपलब्धियों का मूल्यांकन करता है।

श्रेष्ठ और विकसित रा० सं० के लिए जरूरी है कि व्यक्ति राष्ट्र और अपने साथी नागरिकों के प्रति सहानुभूति का अनुभव करे - सिड्नी वर्बा

Neenu...

Scanned with CamScanner